आरती श्री गायत्री जी की (२)

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता ।
आदि शक्ति तुम अलख निरंजन, जग पालन कर्ता ।।
दुःख शोक भय क्लेश कलह, दारिद्र दैन्य हरती । जयति () ।
ब्रह्मस्वरूपिणी, प्रणत पालिनी, जगद्धातृ अम्बे ।
भव भय हारी, जन हितकारी, सुखदा जगदम्बे । जयति () ।
भय हारिणी, भवतारिणी अनघे अज आनंद राशि
अविकारी, अघहारी, अविचलित, अमले अविनाशी । जयति () ।
कामधेनु सत चित आनंद, जय गंगा-गीता ।
सविता की शाश्वती शक्ति, तुम सावित्री-सीता । जयति () ।
ऋगः, यजुः, सामः अथर्वः, प्रणयनी, प्रणव महामहिमे ।
कुण्डलिनी सहस्रारसुषुम्ना शोभा गुण गरिमे । जयति () ।
स्वाहा, स्वधा, शची, ब्रह्माणी राधा रुद्राणी ।
जय सतरूपा, वाणी, विद्या, कमला कल्याणी । जयति () ।
जननी हम हैं दीन हीन, दुःख दारिद्र के घेरे ।
यदपि कुटिल कपटी कपूत, तब भी बालक हैं तेरे । जयति () ।
स्नेहमयी, करुणामयी माता, चरणों में शरण दीजै ।
विलख रहे हम शिशु-सुत तेरे, दया दृष्टि कीजै । जयति () ।
काम, क्रोध, मद, लोभ दम्भ, द्वेष, दुर्भाव हरिये
विशुद्ध वुद्धि निष्पाप हृदय, मन को पवित्र करिये । जयति () ।
तुम समर्थ सब भांति तारिणी, तुष्टि-पुष्टि त्राता ।
सत्य मार्ग पर हमें चलाओ, जो है सुख दाता । जयति () ।

।। गायत्री मंत्र ।।

।। ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरिण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

विवरण

हे गायत्री माता ! आपकी जय हो । शक्ति के रूप में आप ही हो तथा अदृश्य रूप से सारे जग का पालन करने वाली हो । हमारे शोक, दुःख, भय, क्लेश एवं कलह तथा हमारी दरिद्रता को नष्ट करने वाली हो ।

ब्रह्मा के रूप में (माँ सरस्वती) आप ही हो तथा हमारे प्राणों की रक्षा करने वाली हो एवं सम्पूर्ण जगत की माता हो । हमारे मन में जन्म - मरण का जो भय रहता है, उसको हटाने वाली तथा सभी लोगों का भला करने वाली एवं सभी सुखों को देने वाली हो ।

हमारे पापों का शून्य करके हमें आनन्द प्रदान करने वाली हो । आप दोषरहित हो, पापों को हरनेवाली हो तथा हमारे दुर्विचारों को दूर करनेवाली हो । गंगा एवं गीता के रूप में भी आप ही हो तथा सच्चे आनदं को देनेवाली कामधेनु के
रूप में भी आप हो ।

सविता की शाश्वती शक्ति भी आप हैं तथा सीता एवं सावित्री भी आप ही हैं । ऋग, साम, यजु एवं अथर्व वेदों में आपके प्राण हैं, इन सभी वेदों में आप ही के गुणों की चर्चा की गई है । आपके कानों में कुण्डल की शोभा बड़ी ही प्रिय लगती है। सभी देवताओं के रूप में आप ही हो तथा माता सरस्वती, राधा एवं शिव की पत्नी भी आप ही हो ।

आपका ये सुन्दर रूप, वाणी एवं विद्या को शुद्ध बनानेवाला तथा सबका भला करने वाला है । हे माँ ! हम बड़े ही दीन एवं दुःरवी हृदय वाले प्राणी हैं, अपने मन की व्यथा एवं दरिद्रता से घिरे हुए हैं । हम भले ही छल हृदय वाले प्राणी हैं परन्तु बालक तो आप ही के हैं, इसलिए अपने प्रेम एवं ममता को लुटाने के लिए माता हमें अपने चरणों में जगह दीजिए ।

आपके पुत्र विलख रहे हैं, उन पर अपनी दया दिखा दो । हमारे अन्दर जितने भी र्दुगुण हैं, उन्हें आप नष्ट कर दीजिए । स्वच्छ एवं शुद्ध बुद्धि बनाइए तथा हमारे हृदय को पापरहित करके हमारे मन को पावन

बनाईए । आप सभी प्रकार से योग्य हो एवं हमारे मन को संतुष्ट करने वाली हो । हे माँ! हमें सच्चा रास्ता दिखाना जो सुख का आधार है ।

गायत्री मंत्र

उस प्राण स्वरूप दु:ख विनाशक, सुख स्वरूप श्रेष्ठ तेजस्वी, पापनाशक देवस्वरूप परमात्मा को हम अन्तरात्मा में धारण करें , वह परमात्मा हमारे बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रेरित करें ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.